शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

गालिब के काव्य में सौन्दर्य बोध

डॉ. ओबैदुल गफ्फार
भारतीय भाषा और साहित्य विभाग,
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय
गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

गालिब का रूझान शुरू से ही फारसी साहित्य की ओर रहा, जिसका प्रभाव उनके उर्दू साहित्य में भी देखने को मिलता है। यह उनकी काव्य शैली में और अधिक निखार पैदा करती है किन्तु ऐसा अधिक समय तक नहीं चलने वाला था, क्योंकि गालिब तो गालिब ठहरे। थोड़े ही अर्से के बाद गालिब ने अपनी लेखन शैली बना ली जो खुद गालिब की ही है, क्योंकि उन्होंने नये ख्यालात से उर्दू शायरी को रौशन किया तो उस दौर के सभी साहित्यकारों ने उसे सराहा। दैर-ए-गालिब में गालिब ने काव्य शैली में जिद्दत पसन्दी (नये रूझान) गालिब की शायरी में सौंदर्य बोध कराती है।

मुख्य शब्द : गालिब, दैर-ए-गालिब, सौन्दर्यशास्त्र, मज़हबी और जदीद, फलसफ-ए-जिन्दगी, फिरदौस, सुखनवर, तसौव्वुफ, *ख़ूंगर* ।

प्रस्तावना

शब्द सौन्दर्य में भावना तथा कल्पना तत्व की प्रधानता होती है। सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों में कर्म की प्रधानता होती है। सौन्दर्य सर्जनात्मक है, जबकि सामाजिक नैतिक मूल्य क्रियात्मक, यकीनन सौन्दर्य, दर्शन, अंतर्द्वंद्व और सामरस्य का दर्शन है। अभिव्यक्ति के स्तर पर यह सौन्दर्य और अनुभूति के तौर पर परमानन्द है। हमारी प्रकृति सौन्दर्य से परिपूर्ण हैं। मनुष्य अपनी इच्छाशक्ति से ही इसकी व्याख्या कर सकता है। यूँ तो परम्परा के अनुसार सौन्दर्यशा दर्शन की एक शाखा का नाम है, जिसका विवेच्य विषय कला और प्रकृति का सौन्दर्य है। हीगल महोदय ने सौन्दर्य को कला का दर्शन कहा है। साहित्य के क्षेत्र में उर्दू शायर गालिब का नाम प्रसिद्ध है। जहाँ तक उनकी शायरी और उसमें सौन्दर्य का प्रश्न है तो यकीन मानिये गालिब की शायरी की हर पंक्ति में हमें सौन्दर्य का बोध होता है। क्लासिकी शायरी ज्यादातर मज़हबी और जदीद (आधुनिक) शायरी ज्यादातर सेक्यूलर है। शायरी के लिये जरूरी नहीं कि वह धर्म की अहमियत से इनकार करे, लेकिन शायरी का आरम्भ मज़हबी सोच से सेक्यूलर सोच की ओर हुआ है। इकबाल को भी यह कहना पड़ा कि 'कारे जहाँ दराज है अब मेरा इंतजार कर' - इसलिए देखा जाए तो उर्दू के जितने उस दौर के बड़े शायर थे, जैसे - वली, मीर, सौदा, नज़ीर सब सेक्यूलर शायरी है और गालिब के यहाँ आकर यह सेक्यूलर शायरी एक ऐसी बुलन्दी की ओर बढ़ती है जो किसी नजरिये या फलसफ-ए-जिन्दगी या आइडियालोजी की पाबन्द नहीं रह जाती। शायरी में सौन्दर्य वर्णन

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

की बहुत अहमियत है, किन्तु सौन्दर्य (जमालीयात) का अर्थ खूबसूरती या रंगीनी के नहीं है, जिसमें अर्थ की प्रधानता छिपे होने का हमें एहसास दिलाये जिसके षेर में हर तरह के विशय की गुंजाइश हो।

साहित्य जगत में गालिब का नाम अमर है। गालिब का व्यक्तित्व समस्त उर्दू साहित्य के इतिहास में सबसे महान माना जाता है। पद्य और गद्य दोंनो में ही उनको महानता प्राप्त है। वे फारसी के भी उतने ही बड़े लेखक थे, जितने उर्दू के उनमें और उनकी काव्य रचना में उनके दौर यानी मुगल सभ्यता की समस्त अच्छाइयाँ और बुराइयाँ सिमट आयी हैं। वे उसका जीता जागता प्रतीक हैं। गालिब पर जब हम दृष्टि डालते हैं तो वे एक प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति और एक महान लेखक के रूप में प्रतीत होते हैं। यही एक कारण है कि जिससे पुराने और नये सभी आलोचकों ने उन पर बहुत सी पुस्तकें और निबन्ध लिखे हैं और ज्ञान व चेतना के दर्पण में उनका सुन्दर चित्र देखने को मिलता है।

शायर शहरी भी होता है और शहरी की अपने समाज के प्रति जिम्मेदारी भी होती है। शहरी के घर में जब आग लगे तो उसे बुझाना चाहिए और आग बुझाने के लिये अपनी लेखनी से दूसरे शहरियों को भी आगाह करना चाहिए। यह भी हो सकता है कि शहर की आग दिल की आग बन जाए और इस माहौल में शेर भी लौ देने लगें। शायर का यह मकसद होना चाहिए कि वह अपनी कविताओं के द्वारा मनुष्य की रूह को भी आईना दिखाये जिससे समाज और शहरी बेहतर बन सके। गालिब का यही अंदाज-ए-बयान उन्हें उनके हमअसरों में ऊँचा मकाम हासिल कराता है। गालिब कहते हैं कि -

क्यों न फिरदौस में दोजख को मिला दे या रब।
सैर के वास्ते थोड़ी सी फिज़ा और सही।।1

यह गालिब का अंदाज-ए-बयाँ है। जहां वह स्वर्ग और नरक के फर्क को भी व्यंग्यात्मक अंदाज में बयान करते हैं। गालिब के अनुसार, प्रौढ़ कवि का व्यक्तित्व प्लेटिनम के तार के समान है। उन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर सामाजिक चिन्तन को उत्प्रेरक के सामान महसूस किया। अगर देखें तो काव्य की दुनिया के सन्दर्भ में दर्शन और सामाजिक परिस्थितियाँ उत्प्रेरक का काम करती हैं। और अगर कवि, कवि ही रहता है तो अक्सर एक आदर्श उत्प्रेरक की तरह काव्य संसार में उथल-पुथल मचाकर और नष्ट होकर भी काव्य के यथार्थ संसार में भी वैसी की वैसी बची रह जाती है। आज जब हम सत्य को पहचानने की कोशिश करते हैं तो गालिब की महानता का राज़ समझ में आता है।

साहित्य और कवि

कवि और साहित्य की वफादारी कविता-साहित्य से होनी चाहिए। किसी नजरिये, आइडियालाजी और दर्शन की पासदारी से कवि महान नहीं होता। कविता और साहित्य समाज सुधार का आला नहीं बन सकती। इसके लिए शिक्षा और शहरियत की सीख देनी चाहिए कविता और साहित्य मनुष्य के अन्दर ऊर्जा उत्पन्न करती है व सामाजिक बदलाव से प्रभावित हो सकती है और होती भी है। इसमें हर तरह के दार्शनिक दृष्टिकोण या आइडियालाजी के अक्ष की गुंजाइश होती है। चाहे वह कोई धार्मिक दृष्टिकोण हो या राजनीतिक आइडियालाजी किन्तु कवि और साहित्यकार के यहां उसके दृष्टिकोण को ही अहमियत देनी चाहिए इन दृष्टिकोणों में से किसी खास विषय को नहीं चुनना चाहिए। हिरन पर घास लादने की भूल नही करनी चाहिये यह रेत पर पुल बनाने का कार्य है। कविता का

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मकसद सौन्दर्य में निहित है। सौन्दर्य का अक्स मनुष्य के विचारों में होता है। विचार के आने से मनुष्य के अन्दर एक ऐसी खुशी की लहर दौड़ती है जिससे वह पूरी कायनात को खुशनुमा बना देती है। कवि और साहित्यकार अपने अमल में हयाती और कायनाती होता है। मकसद और अमल में फर्क को नजरअंदाज करना आवश्यक होता है।

गालिब की उर्दू कविता को कई शैलियों में विभक्त किया जा सकता है। प्रारम्भिक दौर में उन्हें फारसी भाषा की मिठास की ऐसी लत पड़ी थी कि उन्होंने उर्दू को भी फारसी भाषा के ढाँचे में ढालने की कोशिश की; क्योंकि उस समय उनका विचार था कि उर्दू भाषा में इतनी शक्ति नहीं है कि वह जटिल व उदासीन विचारों को वहन कर सके। उन्होंने एक फारसी शे'र में स्वयं कहा है कि यदि कोई मेरी कविता से आनन्द उठाना चाहता है तो मेरी फारसी कविताएँ पढ़े। उर्दू काव्य तो नीरस है, किन्तु गालिब का यह विचार ठीक सिद्ध नहीं हुआ और उनका यह विचार वैसा ही रह गया; क्योंकि जिस उत्साह से उनकी उर्दू कविताएँ पढ़ी और गायी जाती हैं, उतनी फारसी की नहीं। या यूँ कहें कि फारसी की कविताएँ नहीं के बराबर पढ़ी जाती हैं। गालिब का फारसी प्रेम एक और रूप में देखने को मिलता है। उन्होंने अपनी उर्दू शायरी में भी बेदिल नामक एक फारसी कवि के अनुकरण करने की चेष्टा की।

ग़ालिब और उर्दू भाषा

गालिब से पहले उर्दू के बड़ेबड़े कवियों ने कवितायें लिखी है। गालिब फारसी कवियों की जिस परम्परा में पैदा हुये थे, वह परम्परा समास-बहुलभाषा और वर्णन-प्रधान शैली के प्रयोग की परम्परा थी। गालिब ने फारसी में इस परम्परा को निभाने का प्रयत्न किया, किन्तु उन्होंने अनुभव किया कि उर्दू में इस परम्परा की आवश्यकता नहीं। है। इसमें गुंजाइश-इबारत आराई मुमकिन नहीं है। इस अनुभूति ने गालिब की उर्दू कविताओं में एक नया कमाल पैदा किया। इस कमाल को गालिब पहचान गये थे, इसीलिये तो उन्होंने कहा है कि -

हैं और भी दुनियाँ में सुखनवर बहुत अच्छे।
कहते है कि गालिब का है अंदाज-ए- बयाँ और।
2

गालिब का यह अन्दाज बयाँ और क्या है ? गालिब ने उर्दू में बनावटीपन से बचने का भरसक प्रयत्न किया है। यह बात हम भाषा में भी देखते हैं और भाव में भी। उनका यह अंदाज पद्य और गद्य दोनों में देखने को मिलता है। उस समय गालिब की शायरी का एक बहुत थोड़ा सा हिस्सा साधारण लोगों की समझ में आता था। पच्चीस वर्ष होने के साथ उनमें परिपक्वता आयी और उन्होंने अपनी शैली में परिवर्तन किया। अब वह ख्यालों की दुनिया से निकलकर जीवन की उन समस्याओं की ओर आये, जिनका उन्हें वास्तविक अनुभव और ज्ञान था। बहुत कम समय में ही उनकी काव्य रचना में कलात्मक दक्षता पैदा हो गयी। उनकी उपमाएँ एवं उत्प्रेक्षाएँ नयी होती थीं। उनकी कल्पना शक्ति बेजोड़ थी। इसमें इतनी शक्ति होती थी कि वे बेजोड़ वस्तुओं और बेमेल विषयों में भी समानता और सम्बन्ध ढूँढ लेते थे। जितना समय बीतता गया, उतनी ही गालिब की शायरी में दार्शनिकता और कलात्मक सुन्दरता बढ़ती गयी। यकीनन इसमें कोई संदेह नहीं कि बेसरापा सामन्तवादी सभ्यता के रंग में डूबे हुये थे और उनकी तमाम अच्छाईयाँ और बुराईयाँ उनमें मौजूद थी। वह अपनी खुली आँखों से दुनिया की हकीक़त

पहचानते थे, और अपनी निरीक्षण शक्ति से काम लेकर वह जीवन से ऐसी सच्चाईयाँ ढूँढ निकालते थे जहाँ तक दूसरों की नजर नहीं पहुँच पाती थी। बदलती दुनिया को देखकर उन्हें यह विश्वास हो गया था कि यह समय बदल जायेगा। समाज में तब्दीली को देखकर कई बार वह हैरत में पड़ जाते और उन हालात को अपनी कविताओं के जरिये बयान भी करते थे, किन्तु इतिहास का कोई दार्शनिक दृष्टिकोण न होने के कारण यह भविष्य निर्माण के बारे में वे कुछ नहीं कर सकते। वह स्वयं उस पतनशील समाज और सभ्यता के एक प्रतीक के रूप में सामने आते हैं। वह अत्यन्त सुंदर मनोभाव के व्यक्ति होने के बावजूद उनकी कविताओं में निराशा और भय की एक हल्की-सी लकीर नज़र आती है। जीवन में निराशा की भावना का सारा रस निचोड़कर अपना जीवन आनन्दमय और सुंदर बनाने के हक़ में नज़र आते हैं। गालिब के अंदाज में यह शे'र

हजारों ख्वाहिशें ऐसी की हर ख्वाहिश पर दम निकले।
बहुत निकले मेरे अरमां लेकिन फिर भी कम निकले।3

इस पंक्ति की रोशनी में यह कहा जा सकता है कि गालिब एक ज़िन्दादिल शायर थे। वह ज़िन्दगी को खुशनुमा और खूबसूरत बनाने की हर मुमकिन कोशिश करते हैं। दुःख में भी उन्हें खुश रहने का सलीका आता था। उनमें प्रेम भावना इतनी प्रबल थी कि संकीर्णता का उनका रिश्ता नाममात्र का भी न था, यहां तक कि धार्मिक भेदभाव उनके विचारों से परे थे। वह सहानुभूति और मानव प्रेम को सबसे बड़ा धर्म समझते थे। उनके यहाँ शेख और ब्राह्मण में कोई अन्तर नहीं था। उनका विचार था कि अपने-अपने ढंग से सच्चाई का पथ खोजने वाले और विश्वासपूर्वक अपने विचारों पर दृढ रहने वाले एक ही होते हैं, चाहे वह किसी भी धर्म से सम्बन्ध रखते हों। उनके मित्रों और शिष्यों में हिन्दू और इसाई भी थे, जिनसे उन्हें उतना ही प्रेम था जितना मुसलमानों से। गालिब की शख्सियत ही ऐसी थी कि उनसे सभी प्रेम करते थे। मगर इसका यह अर्थ नहीं कि वह धर्म और सभ्यताओं की उन सीमाओं को तोड़ चुके थे जो किसी न किसी प्रकार से धार्मिक नैतिकता पर आधारित थी। उनके इन विचारों को तसौव्वुफ से आन्तरिक सम्बन्ध रखने का परिणाम भी कह सकते हैं। इस नजरिये को प्रस्तुत करते हुए गालिब कहते हैं कि -

न सुनो गर बुरा कहे कोई।
न कहो गर बुरा करे कोई।
रोकलो गर गलत चले कोई।
बख्श दो गर खता करे कोई।4

निष्कर्ष

गालिब की काव्य रचना में कल्पना और दर्शन का एक ऐसा सामंजस्य है कि उनके विचार जटिल और कठिन होते हुये भी हृदय पर तीर की तरह जाकर बैठ जाते है। इस दृष्टि से जैसे उनका जीवन एक प्रकार की विचित्रता रखता है, उसी प्रकार उनकी रचनाएँ भी नवीनता से भरी हुई हैं। उर्दू में उन्होंने कुछ कसीदे और अधिकतर गज़लें लिखी है। उर्दू कसीदे दूसरे कवियों के लिखे हुये कसीदे के तर्ज पर लिखे गये हैं और उनकी रीति में परिवर्तन अनुचित समझा जाता था, परन्तु गालिब ने अपने कसीदों में नया रंग पैदा किया और गज़लों में कई प्रकार के प्रयोग करने के बाद अपना मार्ग स्वयं बना लिया है, जो उचित और अनुपम है। उनकी विशेषताओं में वास्तविकता, शैली की सुंदरता, ताज़गी, दार्शनिक

गहरायी, भावनात्मक अनुभूति और नवीनता सब कुछ इस प्रकार से मिले-जुले हैं, जो उनकी काव्य रचना को सुन्दर बनाते हैं। जीवन को उल्लास और विलास के साथ व्यतीत करने की इच्छा उनमें प्रबल थी, परन्तु युग उसमें बाधक था। इसलिये पतनशील समाज के संघर्ष के सुन्दर चित्र उनकी रचनाओं मिलते हैं। यह ठीक है कि उनकी कविता कोई दार्शनिक आदर्श प्रस्तुत नहीं करती, किन्तु जीवन की प्रबलता, महानता और सुन्दरता के गीत गाकर जीवन से प्रेम करना अवश्य सिखाती है। इसलिये कोई भी व्यक्ति जो जीवन की गहराइयों को समझना और उनमें प्रवेश करना चाहता है उसे गालिब की कविताओं में बहुत कुछ मिलेगा।

नींद उसकी है दिमाग उसका है रातें उसकी हैं।
तेरी जुल्फें जिसके बाजू पर परेशां हो गयी।।
रंज से ख़ूंगर हुआ इंसाँ तो मिट जाता है रंज।
मुशकिलें इतनी पड़ीं मुझपर कि आसाँ हो गयी।5

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सलीम चिश्ती, सरह दिवाने गालिब, एजुकेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली 2011, पृष्ठ 232
2. वही, पृष्ठ 238
3. वही, पृष्ठ 473
4. एहतशाम हुसैन उर्दू साहित्य का संक्षिप्त इतिहास एन.सी.पी.यू.एल., दिल्ली, पृष्ठ134
5. सफिनाये गालिब, गालिब आजकल में, प्रकाशन विभाग, नई दिल्लीः 1997, पृष्ठ 222